Sem. 4
MJ-7

लिपि का महत्व

भाषा अपने मूल रूप में ध्वनि पर आधारित है। ध्वनियाँ ही उच्चरित होती हैं और सुनी जाती हैं। इस प्रकार ध्वनि-आधारित भाषा की काल और स्थान की दृष्टि से सीमा है। वह केवल तभी सुनी जा सकती है, जब बोली जाती है और वहीं तक सुनी जा सकती है, जहाँ तक आवाज जा सके। काल और स्थान की इस सीमा के बंधन से भाषा को मुक्त करने के लिए ही मानव-समाज ने लिपि का आविष्कार किया होगा। निश्चय ही, व्याकरण की तरह लिपि का जन्म भी भाषा-विकास के बाद ही हुआ होगा।

लिपि और भाषा का संबंध यह है कि भाषा अपने मूल रूप में ध्वन्याश्रित है, लिपि उन ध्वनियों या शब्दों को रेखाओं, चिह्नों, प्रतीकों द्वारा व्यक्त करने का साधन है। अर्थात् दोनों में माध्यम का अन्तर है। इस प्रकार, लिपि या लेखन-पद्धति से तात्पर्य किसी भी भाषा का लेखन। लिपि किसी भाषा की नहीं होती है, यह तो किसी ध्वनि या शब्द को लिखित रूप में व्यक्त करने का माध्यम है। अर्थात् किसी भाषा को किसी भी लिपि में लेखबद्ध किया जा सकता है। एक लिपि से दूसरी लिपि में लेखन ही लिप्यन्तरण कहलाता है।

लिपि के महत्व पर विचार करते हुए निम्नलिखित बिन्दुओं को दर्शाया जा सकता है —

(1) लिपि द्वारा भाषा को स्थायी रूप देना संभव हो सका।

(2) लिपि मानव-ज्ञान के सर्जन, संरक्षण, संवर्धन और सातत्य को बनाये रखने में प्रमुख भूमिका निभाता है। आज ज्ञान-विज्ञान और शोध का विस्तार इसीलिए है कि लिपिबद्ध ज्ञान हमें पूर्व-ज्ञान से परिचित करा पाता है।

(3) लिपि द्वारा भाषा के स्वरूप में एकरूपता तथा स्थिरता आती है, भाषा का मानक रूप प्रत्यक्ष होता है।

(4) किसी भाषा-समुदाय की अस्मिता की महत्वपूर्ण पहचान उसकी लेखन-व्यवस्था, लिपि और लिखित साहित्य है।

(5) लिपि भाषा की संरचनात्मक स्थिरता और प्रामाणिकता को बनाये रखने में सहायक होती है

(6) पारम्परिक भाषा-विज्ञान में मौखिक की अपेक्षा लिखित भाषा को अधिक महत्व दिया जाता है। समाज की सर्वोत्तम साहित्यिक और ज्ञानात्मक उपलब्धियों को संरक्षित करने में लिपि सहायक होती है।

(7) वैधानिक व आधिकारिक स्तर पर भाषा के लिखित स्वरूप की वैधता, मान्यता और महत्व मौखिक की अपेक्षा अधिक होती है। अनुबंध, वसीयत, निविदा आदि की वैधानिक मान्यता होती है।

(8) आनुवांशिक रूप से जुड़ी भाषाओं में प्राप्त लिखित तुलनात्म सामग्री से मृत भाषा के स्वरूप को समझना तथा तत्कालीन सभ्यता-संस्कृति की पहचान संभव हो पाती है।

स्पष्ट है कि लिपि वर्णों एवं चिह्नों के संयोजन की एक विशिष्ट प्रणाली है। यह भाषा का दृश्य-प्रतिरूपण है जो उसे एक स्थूल या मूर्त सांकेतिक स्वरूप प्रदान करती है। अतः लिपि मानव-जाति के हाथों आविष्कृत वह सशक्त माध्यम है, जो ज्ञान-विज्ञान, सभ्यता-संस्कृति, भाव-विचार आदि के संरक्षण, सर्जन, और संवर्धन को पुष्ट करता है।